PAPER NAME

Percieved Employability Research Paper.pdf

WORD COUNT

2819 Words

CHARACTER COUNT

11935 Characters

PAGE COUNT

13 Pages

FILE SIZE

522.2KB

SUBMISSION DATE

Mar 16, 2026 7:14 AM GMT+5:30

REPORT DATE

Mar 16, 2026 7:15 AM GMT+5:30

11% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

- 10% Internet database
- 8% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 11% Submitted Works database

Excluded from Similarity Report

- Bibliographic material
- Quoted material
- Cited material
- Small Matches (Less then 14 words)

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता: एक मात्रात्मक अध्ययन

[*1] विवेक कुमार दीक्षित

शोध छात्र, शिक्षक शिक्षा विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली

Email : vivekkumardixit367@gmail.com

[2]प्रोफेसर (डॉ०) भारती डोगरा**

प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, बरेली कॉलेज बरेली

Email : drbhartidogra@gmail.com

सारांश (Abstract)

वर्तमान प्रतियोगात्मक परिदृश्य में शिक्षित बेरोजगारी युवा वर्ग में मानसिक अवसाद एवं तनाव का कारण बनती जा रही है, अतः शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की रोजगारपरकता के स्तर का अध्ययन किया जाना आवश्यक है | प्रस्तुत अध्ययन में अनुभूत रोजगारपरकता (Perceived Employability) के अर्थ के रूप में विद्यार्थियों द्वारा चयनित पाठ्यक्रम के मूल्य (value of pursuing course), असुरक्षा एवं तनाव, तथा कौशल एवं ज्ञान जैसे आयामों का मूल्यांकन किया गया है | प्रस्तुत अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता का वर्तमान स्तर जानना तथा जेंडर एवं पाठ्यक्रम की प्रकृति जैसे कारकों के संदर्भ में अनुभूत रोजगारपरकता का अध्ययन करना था | वर्णनात्मक अध्ययन की सर्वे शोध विधि का प्रयोग करते हुए शोधकर्ता द्वारा रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली के परिक्षेत्र में अवस्थित महाविद्यालयों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया | न्यादर्श के रूप में विभिन्न महाविद्यालयों में अध्ययनरत स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों में से 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिक रूप से किया गया | के० पी० नाचिमुथु द्वारा निर्मित अनुभूत रोजगारपरकता मापनी का प्रयोग करके आँकड़ों का संग्रह किया गया | मापनी पर प्राप्त प्राप्तांकों का विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकला कि रूहेलखण्ड परिक्षेत्र में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में अनुभूत रोजगारपरकता का स्तर औसत पाया गया | जेंडर के आधार पर छात्रों की अनुभूत रोजगारपरकता छात्राओं की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पायी गई |

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता शैक्षिक (परंपरागत) पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पायी गई |

प्रमुख शब्द (Key Words) – *अनुभूत रोजगारपरकता, स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थी, ज्ञान एवं कौशल*

---

1. अध्ययन की पृष्ठभूमि

तीव्र गति से बदलते वैश्विक परिदृश्य तथा प्रतियोगात्मक श्रम बाजार में, अनुभूत रोजगारपरकता (Perceived Employability), रोजगार प्राप्त करने में सार्थक एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है | वानहेर्के एवं अन्य (2014) ने अनुभूत रोजगारपरकता को स्पष्ट करते हुए बताया कि अनुभूत रोजगारपरकता स्वयं का एक व्यक्तिनिष्ठ मूल्यांकन है जो कि व्यक्ति की रोजगार प्राप्त कर लेने एवं उसे बनाए रखने की संभावनाओं को इंगित करती है |[14] इस अवधारणा से स्पष्ट होता है कि अनुभूत रोजगारपरकता को किसी व्यक्ति के ज्ञान एवं कौशल, समस्या समाधान की योग्यता, असुरक्षा एवं कार्य स्थल के तनाव को सहन कर पाने की योग्यता के रूप परिभाषित किया जा सकता है | एर्गन एवं सेसेन (2021) के द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि सामान्य कौशल, शैक्षिक प्रदर्शन, विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ तथा बाह्य श्रम बाजार का रोजगारपरकता की अवधारणा के साथ सकारात्मक सार्थक सहसंबंध है |[4] सकाकी (2022) के द्वारा किए गए अध्ययन में पाया गया कि अनुभूत रोजगारपरकता कार्य असुरक्षा के नकारात्मक प्रभाव को दूर करती है, कम अनुभूत रोजगारपरकता वाले लोगों को नियोक्ताओं द्वारा उच्च अनुभूत रोजगारपरकता वाले कर्मचारियों की अपेक्षा चयन में कम महत्त्व दिया जाता है |[11] अग्निहोत्री एवं अन्य (2020) ने पाया कि अनुभूत रोजगारपरकता में आत्मविश्वास, शैक्षिक प्रदर्शन, संपर्क, सामान्य कौशल, कैरियर शिक्षा, रोजगार सहायता आदि, जैसे कारक समाहित हैं |[2] सरकार एवं दास (2025) ने अनुभूत रोजगारपरकता को रोजगार के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान तथा विशेषताओं के रूप में परिभाषित किया है, जो कई व्यक्तिगत एवं संस्थागत कारकों से प्रभावित होती है |[13]

अनुभूत रोजगारपरकता न सिर्फ रोजगार प्राप्त करने में सहायक कारक के रूप में है अपितु कार्य संतुष्टि एवं कैरियर की उन्नति पर भी प्रभाव डालती है, अतः यह पेशेवर सफलता की कुंजी की भाँति है | अनुभूत रोजगारपरकता की समझ के द्वारा व्यक्ति अपनी योग्यता एवं क्षमता तथा संसाधनों के अनुरूप अपना कैरियर लक्ष्य तय कर सकता है, जिससे भविष्य में उपयुक्त रोजगार की प्राप्ति की जा सके | श्रम बाजार की माँग एवं प्रतियोगात्मक

परिस्थितियों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा के माध्यमिक एवं उच्च स्तर पर विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की जाँच की जाए तथा उन्हें नवीन परिस्थितियों के अनुरूप तैयार करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए | कुमार (2020) द्वारा किए गए अध्ययन के माध्यम से यह सुझाव दिया गया कि पढ़ाई तथा रोजगार कौशलों के मध्य व्याप्त अंतराल को कम करने के लिए पाठ्यक्रमों में यथोचित संशोधन किया जाए |[8] मोहपात्रा तथा मेहर (2018) के द्वारा किए गए अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि रोजगारपरकता के लिए विद्यार्थियों में बुनियादी ज्ञान, प्रायोगिक समझ, कंप्यूटर का ज्ञान तथा संचार कौशलों का होना अति आवश्यक है |[9]

विभिन्न तथ्यों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत अध्ययन में स्नातक कक्षाओं में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की जाँच विभिन्न कारकों के संदर्भ में की गई है, जिनमें अनुभूत रोजगारपरकता का वर्तमान स्तर तथा जेंडर एवं पाठ्यक्रम की प्रकृति के आधार पर समूहों में परस्पर तुलना की गई | पाठ्यक्रम की प्रकृति के अंतर्गत शैक्षिक पाठ्यक्रमों के में परंपरागत स्नातक पाठ्यक्रमों यथा - बी० ए०, बी० एससी० तथा बी० कॉम० में अध्यायनरत तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के अंतर्गत बी० बी० ए०, बी० सी० ए०, एल० एल० बी० इत्यादि पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है |

अनुभूत रोजगारपरकता (Perceived Employability)

प्रस्तुत अध्ययन में अनुभूत रोजगारपरकता से तात्पर्य यह जानने से है कि स्नातक स्तर के विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रम के प्रति कितने आश्वस्त हैं कि उनका पाठ्यक्रम उन्हें किस सीमा तक रोजगार प्रदान करने की गारंटी देता है | साथ ही विद्यार्थियों द्वारा चयनित पाठ्यक्रम उन्हें भविष्य में उनके कैरियर उन्नयन में पाठ्यक्रम की महत्ता, असुरक्षा एवं तनाव का सामना करने की शक्ति तथा कौशल एवं ज्ञान किस सीमा तक प्रदान करता है, इस संदर्भ में अनुभूत रोजगारपरकता को परिभाषित किया गया है |

1.1. शोध प्रश्न

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में अनुभूत रोजगारपरकता की वर्तमान स्थिति क्या है ?
2. क्या विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता जेंडर एवं पाठ्यक्रम की प्रकृति से प्रभावित होती है ?

1.2. अध्ययन के उद्देश्य

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की वर्तमान स्थिति की जाँच करना |
2. जेंडर एवं चयनित पाठ्यक्रम की प्रकृति (शैक्षिक एवं व्यावसायिक) का अनुभूत रोजगारपरकता के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना |

1.3. परिकल्पनायें

1. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अनुभूत रोजगारपरकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |
2. स्नातक स्तर पर अध्ययनरत शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

हिलेज एवं पोलॉर्ड (1998), फुगेट एवं अन्य (2004), सांडर्स एवं डी ग्रिप (2004), ओर्जी एवं अन्य (2013), वानहेर्के (2014) तथा सरकार एवं दास (2025) ने अनुभूत रोजगारपरकता का संप्रत्यय स्पष्ट करते हुए पाया कि अनुभूत रोजगारपरकता के अंतर्गत श्रम बाजार के अवसर, मानव पूँजी, आत्म – प्रभावकारिता, रोजगार प्राप्त करने की संभावना जैसे कारकों को शामिल किया गया है |[6, 5, 12, 10, 14, 13] अब्बास एवं इमाम (2016), कोबोला (2017), मोहपात्रा एवं मेहर (2018), एर्गन एवं सेसेन (2021) ने पाया कि अनुभूत रोजगारपरकता को प्रभावित करने वाले कारकों में समस्या समाधान कौशल, मृदु कौशल जैसे – संचार, श्रवण तथा तकनीकी आदि सम्मिलित हैं |[1, 7, 9, 4]

3. शोध प्रविधि

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करने तथा जेंडर एवं पाठ्यक्रम के प्रकार के आधार पर तुलना करने के लिए प्रस्तुत शोधकार्य वर्णनात्मक शोध की सर्वेक्षण विधि से किया गया |

3.1 जनसंख्या तथा न्यादर्श

प्रस्तुत शोधकार्य में जनसंख्या के रूप में रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली परिक्षेत्र के अंतर्गत समस्त महाविद्यालयों में स्नातक अंतिम वर्ष में अध्ययनरत शैक्षिक (परंपरागत) एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों का चयन किया गया | रूहेलखण्ड परिक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कुल 58 महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श की बहु-स्तरीय न्यादर्श विधि से किया गया है | महाविद्यालयों के चयन के उपरांत उनमें अध्ययनरत 800 विद्यार्थियों का चयन लॉटरी विधि से किया गया, जिनका श्रेणीकरण जेंडर एवं पाठ्यक्रम के प्रकार के आधार पर किया गया |

3.2. प्रयुक्त उपकरण

प्राथमिक प्रदत्त संकलन हेतु के० पी० नाचिमुथु द्वारा निर्मित अनुभूत रोजगरपरकता मापनी (Perceived Employability Scale) का प्रयोग किया गया जिसमें तीन आयामों – चयनित पाठ्यक्रम का मूल्य (V), असुरक्षा एवं तनाव (I) तथा कौशल एवं ज्ञान (S) का मापन किया गया, जिसमें तीनों आयामों के कुल 39 पद दिए गए हैं | उक्त मापनी लिकर्ट की पाँच बिन्दु मापनी पर आधारित है तथा उच्च विश्वसनीयता एवं वैधता को प्रदर्शित करती है (स्प्लिट हाफ विश्वसनीयता 0.90 तथा परीक्षण – पुनर्परीक्षण विश्वसनीयता 0.74) |

3.3. प्रदत्त संकलन एवं विश्लेषण की प्रक्रिया

प्रदत्तों का संकलन रूहेलखण्ड परिक्षेत्र में अवस्थित तथा न्यादर्श हेतु चयनित कॉलेजों के प्राचार्यों से अनुमति लेकर विभिन्न स्नातक पाठ्यक्रमों के अंतिम वर्ष में अध्ययनरत विद्यार्थियों से किया गया | प्रदत्तों का विश्लेषण वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकीय विधियों से किया गया जिसमें प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन तथा t – test सम्मिलित हैं | समस्त सांख्यिकीय परीक्षणों का निष्पादन SPSS सॉफ्टवेयर की सहायता से किया गया |

4. परिणाम एवं निष्कर्ष

4.1. वर्णनात्मक सांख्यिकी

तालिका संख्या – 1

प्राप्तांक रेंज	विद्यार्थियों की संख्या (N)	विद्यार्थियों की संख्या प्रतिशत में	अनुभूत रोजगारपरकता का स्तर
134 एवं अधिक	398	49.75%	उच्च
103 – 133	195	24.375%	औसत
102 एवं निम्न	207	25.875%	निम्न

तालिका संख्या – 1 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि रूहेलखण्ड परिक्षेत्र में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों में से 49.75 प्रतिशत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता का स्तर उच्च, 24.75 प्रतिशत का स्तर औसत एवं 25.87 प्रतिशत विद्यार्थियों का निम्न स्तर पाया गया | जिससे यह निष्कर्ष निकलता है कि रूहेलखण्ड परिक्षेत्र में स्नातक स्तर पर अध्ययनरत लगभग आधे विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता का वर्तमान स्तर औसत से अधिक अर्थात उच्च पाया गया, लगभग एक चौथाई विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता का स्तर औसत तथा एक चौथाई विद्यार्थियों में निम्न स्तर की अनुभूत रोजगारपरकता पाई गई |

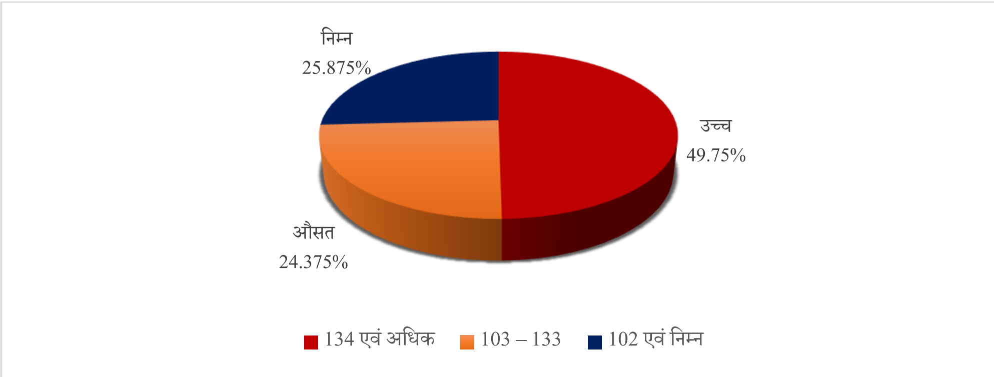

चार्ट – 1 स्नातक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता का प्रतिशत

4.2. आनुमानिक सांख्यिकी

4.2.1. परिकल्पना - 1 का परीक्षण

तालिका संख्या – 2

स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अनुभूत रोजगारपरकता की तुलना

आयाम (Dimensions)	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतंत्रता की कोटि	t – मान	सार्थकता
चयनित पाठ्यक्रम का मूल्य/ महत्ता (V)	छात्र	410	45.89	13.47	798	**5.24**	* **
	छात्राएं	390	41.11	12.21			
असुरक्षा एवं तनाव (I)	छात्र	410	50.04	13.94	798	**4.80**	* **
	छात्राएं	390	45.53	12.56			
कौशल एवं ज्ञान (S)	छात्र	410	41.08	12.74	798	**6.05**	**
	छात्राएं	390	35.95	11.10			
कुल अनुभूत रोजगारपरकता	**छात्र**	**410**	**137.02**	**39.39**	**798**	**5.46**	* **
	छात्राएं	**390**	**122.60**	**34.93**			

***0.05 स्तर पर सार्थक** ****0.01 स्तर पर सार्थक**

उपर्युक्त तालिका संख्या – 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि मापनी का प्रथम आयाम 'चयनित पाठ्यक्रम का मूल्य' पर 410 छात्रों (M = 45.89, S.D. = 13.47) एवं 390 छात्राओं (M = 41.11, S.D. = 12.21) का t – मान 5.24 पाया गया, अर्थात छात्राओं के समूह का मध्यमान, छात्राओं के समूह से सार्थक रूप से उच्च पाया गया | 'असुरक्षा एवं तनाव' पर छात्रों (M = 50.04, S.D. = 13.94) एवं छात्राओं (M =45.53, S.D. = 12.56) के समूह में सार्थक रूप से भिन्नता पायी गई, समूहों का परिगणित t – मान = 4.80 पाया गया | 'कौशल एवं ज्ञान' पर छात्रों एवं छात्राओं में सार्थक अंतर पाया गया, छात्र (M = 41.08, S.D. =12.74) एवं छात्राएं (M = 35.95, S.D. = 11.10), t – मान = 6.05 |

तालिका संख्या – 2 से यह भी स्पष्ट होता है कि कुल अनुभूत रोजगारपरकता का मध्यमान छात्र एवं छात्राओं के समूह का क्रमशः 137.02 तथा 122.60 एवं मानक विचलन क्रमशः 39.39 तथा 34.93 पाया गया, दोनों समूहों का परिगणित t – मान 5.46 पाया गया जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है | अतः शून्य परिकल्पना – *"स्नातक स्तर पर अध्ययनरत छात्र एवं छात्राओं की अनुभूत रोजगारपरकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है"* – निरस्त की जाती है |

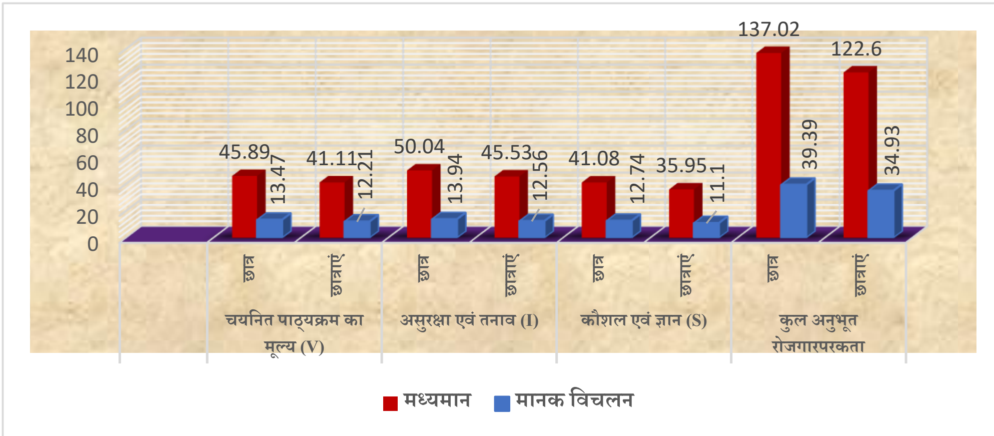

चार्ट – 2 छात्र एवं छात्राओं की अनुभूत रोजगारपरकता की तुलना

4.2.2. परिकल्पना – 2 का परीक्षण

तालिका संख्या - 3

शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रम के विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की तुलना

आयाम (Dimensions)	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	स्वतंत्रता की कोटि	t – मान	सार्थकता
चयनित पाठ्यक्रम का मूल्य/ महत्त्व (V)	शैक्षिक	472	41.04	12.65	798	**6.69**	* **
	व्यावसायिक	328	47.17	12.86			
असुरक्षा एवं तनाव (I)	शैक्षिक	472	45.61	13.15	798	**5.74**	* **
	व्यावसायिक	328	51.06	13.28			
कौशल एवं ज्ञान (S)	शैक्षिक	472	36.04	11.54	798	**7.27**	**
	व्यावसायिक	328	42.24	12.29			
कुल अनुभूत रोजगारपरकता	**शैक्षिक**	**472**	**122.69**	**36.36**	**798**	**6.69**	* **
	व्यावसायिक	**328**	**140.49**	**37.78**			

***0.05 स्तर पर सार्थक** ****0.01 स्तर पर सार्थक**

उपर्युक्त तालिका संख्या – 3 में शैक्षिक पाठ्यक्रमों के 472 एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के 328 विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता की तुलना की गई है | 'चयनित पाठ्यक्रम के मूल्य (V)' पर शैक्षिक (M = 41.04, S.D. = 12.65) एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (M = 47.17, S.D. = 12.86) का t – मान 6.69 पाया गया,

अर्थात शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों के चयनित पाठ्यक्रम के मूल्य में सार्थक अंतर है | ‘असुरक्षा एवं तनाव’ में शैक्षिक (M = 45.61, S.D. = 13.15) एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (M = 51.06, S.D. = 13.28) का t - मान 5.74 पाया गया, अर्थात दोनों समूहों का असुरक्षा एवं तनाव पर मध्यमान सार्थक रूप से भिन्न है | ‘कौशल एवं ज्ञान’ पर शैक्षिक पाठ्यक्रमों (M = 36.04, S.D. = 11.54) तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों (M = 42.24, S.D. = 12.29) का t – मान 7.27 पाया गया, जो कि दोनों समूहों में सार्थक भिन्नता को दर्शाता है |

उपर्युक्त तालिका संख्या – 3 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि शैक्षिक एवं व्यावसायिक समूहों की कुल अनुभूत रोजगारपरकता का के मध्यमान क्रमशः 122.69 तथा 140.49, एवं मानक विचलन क्रमशः 36.36 तथा 37.78 पाए गए | दोनों समूहों का परिगणित t – मान 6.69 पाया गया जो सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक है | अतः शून्य परिकल्पना – *“स्नातक स्तर पर अध्ययनरत शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है”* – निरस्त की जाती है |

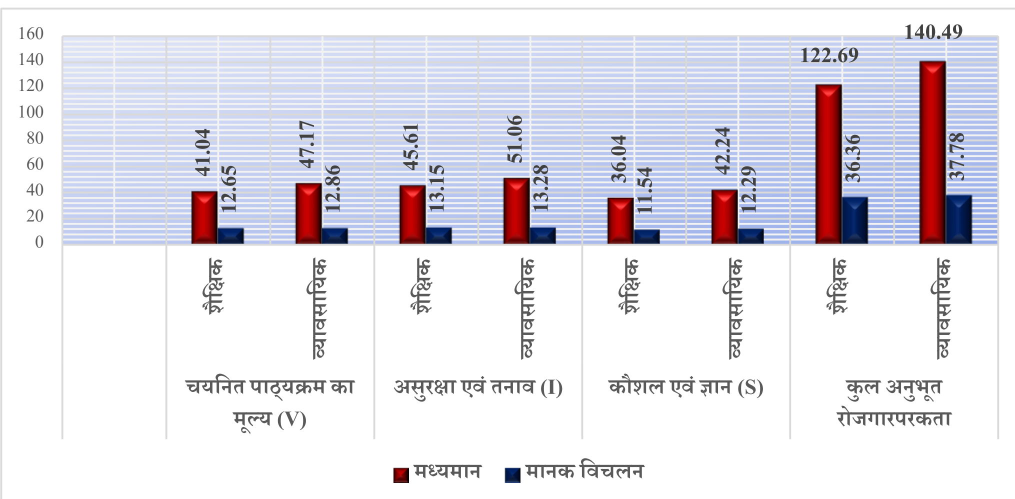

चार्ट – 03 शैक्षिक एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की अनुभूत रोजगारपरकता की तुलना

4.3 निष्कर्ष एवं चर्चा

प्रस्तुत अध्ययन में न्यादर्श से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करने के उपरांत पाया गया कि रूहेलखण्ड परिक्षेत्र के विद्यार्थियों में अनुभूत रोजगारपरकता का स्तर औसत पाया गया | प्रथम परिकल्पना के परीक्षण से यह निष्कर्ष

निकला कि छात्रों की आयमवार एवं कुल अनुभूत रोजगारपरकता छात्राओं से उच्च पाई गई, जिसका संभावित कारण यह हो सकता है कि छात्रों को शिक्षा के प्रारम्भिक स्तर से ही रोजगारपरक विषय पढ़ने तथा विभिन्न कौशल सीखने पर जोर दिया जाता रहा है जबकि छात्राओं के संदर्भ में रोजगारपरक पाठ्यक्रम के चयन तथा कौशल विकास पर अपेक्षाकृत कम बल दिया गया है | सरकार एवं दास (2025) द्वारा किए गए अध्ययन में शोधकर्ताओं द्वारा जेंडर के आधार पर किए गए तुलनात्मक विश्लेषण में पुरुषों की अनुभूत रोजगारपरकता, महिलाओं से सार्थक रूप से उच्च पाई गई |[13] द्वितीय परिकल्पना के परीक्षण से यह निकर्ष निकला कि स्नातक स्तर पर अध्ययनरत व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता, शैक्षिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों से उच्च पायी गई | व्यावसायिक पाठ्यक्रमों समूह की अधिक अनुभूत रोजगारपरकता का संभावित कारण यह हो सकता है कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में कौशल विकास एवं व्यवहारिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है, जो विद्यार्थियों को श्रम बाजार के अनुकूल बनाने में सहायता करता है जबकि शैक्षिक (परंपरागत) पाठ्यक्रमों में सैद्धांतिक ज्ञान पर अधिक बल दिया जाता है, जिस वजह से विद्यार्थी वर्तमान रोजगार आवश्यकताओ के अनुरूप कौशल अर्जित करने में पिछड़ जाते हैं | डोभाल एवं सिंह (2024) द्वारा किए गए अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि कला एवं मानविकी तथा व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की अनुभूत रोजगारपरकता STEM (विज्ञान, तकनीकी, इंजीनियरिंग तथा गणित) एवं परंपरागत पाठ्यक्रमों की तुलना में उच्च थी |[3]

5. शैक्षिक निहितार्थ

श्रम बाजार में बढ़ती प्रतियोगिता तथा तेजी से बदलती तकनीकी के दौर में यह आवश्यक है कि वर्तमान एवं भविष्य की रोजगार की माँग के अनुरूप विद्यार्थियों को तैयार किया जाना चाहिए | प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया कि छात्राओं की अनुभूत रोजगारपरता, छात्राओं की तुलना में कम है, यह निश्चित ही चिंता का विषय है क्योंकि हमारे समाज में संभवतः अब भी लैंगिक विभेद व्याप्त होने के कारण छात्राएं रोजगारपरकता में अपेक्षाकृत कमतर हैं, शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर इस तथ्य को ध्यान रखना चाहिए कि लिंग भेद प्रतिभा के आड़े न या सके | इस अध्ययन के माध्यम से यह भी पता चला कि शैक्षिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थी, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के विद्यार्थियों से अनुभूत रोजगारपरकता में पिछड़े हुए हैं, अतः शैक्षिक (परंपरागत) पाठ्यक्रमों को वर्तमान रोजगार की आवश्यकताओं के अनुरूप अद्यतन करने की आवश्यकता है | संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि वर्तमान

में स्नातक स्तर के पाठ्यक्रमों को रोजगार की आवश्यकता के अनुरूप बनाने एवं निरंतर अद्यतन किए जाने की आवश्यकता है |

संदर्भ (REFERENCES)

1. Abas, M.C. & Imam, O.A. (2016). Graduate's Competence on Employability Skills and Job Performance. *International Journal Of Evaluation And Research in Education (IJERE), ISSN : 2252 – 8822, 5 (2),* 119 – 125. Retrieved From – https://files.eric.ed.gov/ fulltext/EJ1108534.pdf
2. Agnihotri, S., Sareen, P., & Sivakumar, P. (2020). Student perceived employability with reference to media studies: validating A model of key determinants. *Journal of Content Community and Communication*, *12*(6), 30-41.
3. Dobhal, M. & Singh, D. (2024). Perceived Employability of Students Studying in Higher education. *Library Progress International, 44(3),* 17292-17300. ISSN : 2320317X. www.bpasjournals.com
4. Ergün, M., & Şesen, H. (2021). A Comprehensive study on university students' perceived employability: Comparative effects of Personal and Contextual Factors. *SAGE Open*, *11*(3), 21582440211036105. https://doi.org/10.1177/21582440211036105
5. Fugate, M., Kinicki, A. J., & Ashforth, B. E. (2004). Employability: a psycho-social construct, its dimensions, and applications. *Journal of Vocational Behavior, 65(1), 14-38*.
6. Hillage, J., & Pollard, E. (1998). Employability: developing a framework for policy analysis. *London: Institute for Employment Studies*

7. Koloba, H. A. (2017). Perceived employability of university students in South Africa. Is it related to employability skills?. *International Journal of Social Sciences and Humanity Studies*, *9*(1), 73-90. ISSN: 1309-8063 (Online)
8. Kumar V. S. (2020). A Study on employability skills gap analysis among the Arts and Science students in selected area of Tamilnadu. *{29} Infokara Research, ISSN – 1021 – 9056, 9(1),* 112- 119. Retrieved from- https://www.infokara.com/gallery/14-jan-3448.pdf
9. Mohapatra, L. & Mehar, B.K. (2018). Employment Opportunities in India and challenges special references to the students of commerce stream. *Jamshedpur Research Review, Int. Journal of Multi Disciplinary Research. ISSN : 2320 – 2750, 4(23),* 58 – 66. Retrieved from - https://www.researchgate.net/publication/ 329916 614
10. Orji N S (2013). Assessment of employability skills development opportunities for senior secondary school chemistry students. *Journal of Educational Research and Reviews, 1(2),* 16-26
11. . Sakaki, J. (2022). A Review of Research on Perceived Employability and Its Consequences. *International Journal of Accounting and Financial Reporting. 12(4),* 18 - 28. ISSN 2162-3082. DOI - doi: 10.5296/ijafr.v12i4.20595
12. Sanders, J., & De Grip, A. (2004). Training, task flexibility and the employability of low-skilled workers. *International Journal of Manpower, 25(1),* 73-89
13. Sarkar, S. & Das, J. (2025). Perceived Employability and its Determinants Among Generation Z Students in Tripura : A quantitative study. *The International Journal of Indian Psychology* ISSN 2348-5396 (Online) | ISSN: 2349-3429 (Print) Volume 13, Issue 1, January- March, 2025 DIP: 18.01.298.20251301, DOI: 10.25215/1301.298

14. Vanhercke, D., De Cuyper, N., Peeters, E., & De Witte, H. (2014). Defining perceived employability: a psychological approach. *Personnel Review*, *43*(4), 592-605.

11% Overall Similarity

Top sources found in the following databases:

- 10% Internet database
- 8% Publications database
- Crossref database
- Crossref Posted Content database
- 11% Submitted Works database

TOP SOURCES

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

#	Source	Type	Similarity
1	dergipark.org.tr	Internet	2%
2	ijltemas.in	Internet	2%
3	gredos.usal.es	Internet	1%
4	scholar.uoc.ac.in	Internet	1%
5	Universidad Europea de Madrid on 2025-01-05	Submitted works	1%
6	sciencepublishinggroup.com	Internet	<1%
7	s-space.snu.ac.kr	Internet	<1%
8	journalijar.com	Internet	<1%

9	Associatie K.U.Leuven on 2025-08-06 Submitted works	<1%
10	Manipal Academy of Higher Education (MAHE) on 2023-08-03 Submitted works	<1%